IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, February 2021
Impact Factor: 5.731

बिम्बों के कवि : शमशेर

डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय
सहायक आचार्य
वीरभूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महोबा उ0 प्र0
truthonly88@gmail.com

'शमशेर बहादुर सिंह' की कविताओं पर कुछ लिखने के पहले सोचना बहुत पड़ता है लेकिन हाँ इसी सोचने के क्रम में शमशेर पर्त दर पर्त (प्याज के छिलके की तरह) हमारे सामने आने लगते हैं, फिर सारा अर्थ 'बात बोलेगी हम नहीं' के आधार पर खुल जाता है। शमशेर की कविताएँ छोटी हैं लेकिन तीक्ष्ण, गद्यात्मक लगती हैं लेकिन रसात्मक हैं। सपाट लगती हैं लेकिन अर्थवान हैं, कठिन लगती हैं लेकिन सहज हैं। सपाट, कठिन, गद्यात्मक आदि सिर्फ लगती हैं लेकिन वैसी हैं नहीं। शमशेर की पूरी कविताएँ बिम्ब धर्मी होती हैं। अध्ययन मेरा सीमित है, इसलिए हो सकता है कि कुछ सरलीकरण कर बैठूं वैसे मैने जितनी भी शमशेर की कविताएँ पढ़ी हैं सबमें कहीं न कहीं विम्ब जरूर है। बिम्ब की चर्चा किए बगैर शमशेर पूरे नहीं हो सकते। अकारण नहीं है डॉ० गोविन्द प्रसाद शमशेर को 'बिम्बों का कवि' कहते हैं।

शमशेर अपने तरह के अलग कवि हैं। इसीलिए शमशेर की सौन्दर्य भावना का भी एक अपना विशिष्ट रूप है एक कारण यह भी रहा है कि प्रकृति, प्रेम, मार्क्सवाद, यथार्थ और प्रभाववाद सभी से उन्होंने प्रेरणाएँ ली हैं, पर सौन्दर्य भावना का जो भी रूप उनके काव्य से उभरकर आता है, वह विषयगत होते हुए भी वस्तुगत यथार्थ की अन्तर्धारा से संवेदित है। उनकी कविताओं का मुख्य स्वर प्रत्येक स्थिति, मनोदशा और दृश्य में 'सौन्दर्य की आभा' खोजना है, और उसी 'आभा' को ये सौन्दर्यात्मक रूपाकारों और बिम्बों के द्वारा व्यंजित करते हैं। भाषा का विशेष प्रयोग, शब्दों का सार्थक चयन शब्दों के मध्य एक बिम्बगत संगति और अर्थों की तरल और प्रगाढ़ ध्वनियाँ इन सबसे लोगों को लग सकता है कि कवि की सौन्दर्य चेतना 'आत्मगत' है पर यह 'आत्मचेतना' वाह्य चेतना का नकार

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, February 2021
Impact Factor: 5.731

नहीं है पर उसकी बाह्य चेतना का एकीभूत संस्कार है। यह बाह्य और 'अंतर' का भेद इतना सूक्ष्म है कि शमशेर की कविताओं को बगैर इसे ध्यान में रखे उनका सार्थक आस्वादन और मूल्याकंन नहीं हो सकता।

शमशेर बिम्ब प्रधान कवि हैं और इस बिम्बवादी प्रभाव को उन्होंने अनेक स्रोतों से ग्रहण किया है। शमशेर बिम्बों मे कविता लिखते हैं अथवा बिम्ब उनकी रचना रचना प्रक्रिया के अणु रूप है। प्रभाववाद, अति यथार्थवाद, बिम्बवाद, प्रतीकवाद और प्रकृतिवाद-सभी स्रोतों से उन्होंने 'बिम्ब' की रचनात्मकता को ग्रहण किया है। और अपनी निजी और विशिष्ट 'बिम्बशैली' का निर्माण किया है। यही कारण है कि उनके बिम्ब मांसल भी हैं तो कठोर भी, प्रवाही हैं तो स्थिर भी, रंगधर्मी हैं तो गतिधर्मी भी, तथा संवेदन धर्मी हैं तो विचारधर्मी भी। इसे और स्पष्टरूपों में रखा जाए तो प्रभाववादी बिम्बों और रूपाकारों को, प्रकृति और मानव के बोध को, प्रतीकवादियों की लय और ध्वनिशैली को शमशेर ने इस प्रकार 'घोल' का रूप दिया है कि उनके बिम्ब केवल बिम्बमात्र नहीं हैं पर वे उनकी रचनात्मकता को, उनकी यथार्थदृष्टि को एक रोमानी एवं ऐन्द्रिय बोध से ऊपर उठाकर एक व्यापक अर्थवता देते प्रतीत होते हैं। शमशेर केवल ऐन्द्रिय बिम्बों और रूपाकारों के कवि नहीं है पर उनके द्वारा वे इन्द्रियातीत व्यंजना भी देते प्रतीत होते हैं वस्तुतः 'बिम्ब' एक कवि के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं जिसके चारों ओर वे एक व्यापक अर्थ-बिम्ब का रूप साकार करते हैं।

शमशेर की काव्य-प्रेरणा का मूल स्रोत, जैसा कि कहा गया 'बिम्ब' है और इन विम्बों के पीछे उनकी चित्रात्मक संवेदना का विशेष हाथ है। शमशेर के काव्य में चित्र और बिम्ब एक-दूसरे में घुल मिल गए हैं और उसे अधिक स्पष्ट रूप में कहा जाय तो 'चित्रबिम्ब' का एक अद्‌भुत संश्लिष्ट रूप उनकी कविताओं में प्राप्त होता है। वस्तुतः चित्र और कविता के दो कैनवास हैं- एक स्थिर और दूसरा तरल-पर दोनों पारदर्शी और एक दूसरे में छिपे हुए। कवि ने इन दोनों कैनवासों को एक साथ, समानान्तर रूप से अन्तर्भूत किया है-

"एक स्वच्छ और निर्मल
कविता यहाँ बह रही है
एक जवान कविता
वास्तव में, ये दो कैनवास हैं
एक तरल एक स्थिर

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, February 2021
Impact Factor: 5.731

दोनों पारदर्शी

एक दूसरे में छिपे हुए"।[१]

शमशेर के सृजन बोध में जहाँ एक ओर संवेग या भाव की प्रधानता है, वहीं उनकी सृजनात्मकता के विचार-तत्व का भी समावेश प्राप्त होता है। सृजन प्रक्रिया के सन्दर्भ में अक्सर यह प्रश्न उठता है कि नयी कविता के परिप्रेक्ष्य में शमशेर अपने को एक विशिष्ट कवि के रूप में स्थापित करते हैं, जहाँ तक भाषिक संरचना और संवेण प्रवणता का प्रश्न है। 'विचार आज की कविता का एक प्रेरक तत्व है परन्तु शमशेर में यह विचार तत्व, बिम्बों की संश्लिष्टता और दुरूहता के कारण, पकड़ में नहीं आता अथवा वह इतना प्रछन्न हो जाता है कि कविता में अन्तर्धारा का रूप ग्रहण कर लेता है। 'वाम' और मार्क्स से प्रभावित कविताओं में भी यह संश्लिष्ट संयोजन प्राप्त होता है और कवि मतों और वादों को भी 'राम' के धरातल पर ग्रहण करता है। इन कविताओं में नारेबाजी या एकांगिता नहीं है, पर मध्यवर्ग के प्रति एक संवेदना है जो भाषिक स्तर पर संश्लिष्ट और संक्षिप्त है-

"वाम वाम वाम दिशा
समय साम्यवादी
पृष्ठभूमि का विरोध अंधकार लीन। व्यक्ति-
कुहाऽस्पष्ट हृदय-भार आज हीन !
हीन भाव हीन भाव
मध्यवर्ग का समाज, दीन ।"[२]

वैसे इस कविता से किसी 'वाद' के प्रति शमशेर का लगाव खोजना मुझे निरर्थक लगता है क्योकि कुल मिलाकर बकौल राम स्वरूप चतुर्वेदी, मलयज का यह कहना एक दम सही है- "शमशेर 'मूड्स' के कवि हैं किसी विजन के नहीं"।[३]

शमशेर की कल्पना में कभी-कभी वायवीपन का आभास प्राप्त होता है, पर वह नितांत वायवी उन्मुकतता कविता नहीं है, क्योकि उनके पीछे यथार्थ-बोध, प्रकृतिबोध, और परंपरा-बोध का एक गहरा एवं अर्थवान संस्पर्श प्राप्त होता है। कल्पना एक 'अन्तर्दृष्टि' का स्वरूप है जो अनुभव और ज्ञान के गहरे मंथन से प्राप्त होती है। शमशेर की एक प्रसिद्ध कविता 'एक नीला दरिया बरस रहा' में जो बिम्ब और रूपाकार लिए गए हैं

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, February 2021
Impact Factor: 5.731

(कल्पना का रूप) वे प्रकृति, अंतरिक्ष विज्ञान और ग्रह पिंडो के आर्तन से उद्भूत एक बिम्ब है जो क्रमशः अभ्यातंरीकरण- प्रक्रिया के द्वारा अभिव्यक्त होता है-

"एक गोल गति इक करोड़ लाख लाख बार घूम-घूम कर
मुझे लील जाती है
समूचा
अथाहों के दरिया में
अपने अक्स समेत "।[४]

इस कविता में प्रतिबिम्बन क्रिया के द्वारा बाह्य का आभ्यातंरीकरण प्राप्त होता है जो कवि की कल्पना को ज्ञान-संवेदन से समृद्ध करता है। इस प्रकार के अनेक बिम्ब, उनकी कल्पना प्रक्रिया को आज के ज्ञान-विज्ञान से प्रभावित करते हैं जिसमें रोमांटिक भवबोध की एक अन्तर्धारा मंथर गति से प्रवाहित होती है। शमशेर में यह रोमांटिक भावधारा निरपेक्ष रूप में चरितार्थ नहीं होती है बल्कि वह कवि की रचना प्रक्रिया में एक पूरक तत्व के रूप में आती है। मुझे ऐसा लगता है कि कवि के भाव बोध में विलोमों का महत्व उनकी पूरकता है और यही कारण है कि उनकी कविता में विलोमों का 'द्वन्द' प्राप्त नहीं होता है, उनमें एक सहअस्तित्व या पूरकता के दर्शन अधिक होते हैं, वहाँ पर संघर्ष और द्वन्द की वह तीव्रता एवं आवेग प्राप्त नहीं होते हैं, जो आज की कविता का एक सामान्य गुण है। फिर, दूसरी वात यह है कि शमशेर जिस प्रकार की चित्रात्मक और लयबद्ध कोमल रूपाकारों की भाषा का प्रयोग करते हैं, वह संघर्ष और द्वन्द की भाषा नहीं है जो हमे कबीर, निराला, मुक्तिबोध, धूमिल, और अन्य कवियों में प्राप्त होती है। कवि की भाषा में एक प्रकार की 'बुनाक्ट' अधिक है जो नयी कविता की भाषा के निकट है। इस तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में इतना अवश्य कहा जा सकता है कि शमशेर की एक अपनी निजी भाषा है जो अपने में विशिष्ट और ध्वनिपूर्ण है। इस बिन्दु पर शमशेर अपने समकालीनों से अलग पड़ जाते हैं।

शमशेर की रचना-प्रक्रिया में भावोद्वेग शांत, गंभीर और गहरा होता है जो भाषा के स्तर पर भी इसी प्रकार के रूपाकारों के द्वारा अभिव्यक्त होता है। "शेली और शमशेर में यह एक समानता है कि दोनों के भावोद्वेग शांत और गंभीर होते हैं और उसी की दृष्टि से उनमें भाषिक खोज आरंभ होती है।"[५]

शेली एक ऐसे कवि हैं जो भाषिक रूपाकारों को अपनी भावोद्दीपन प्रक्रिया से इस प्रकार जोड़ता है जो दीर्घ रचना प्रक्रिया और विचार-प्रक्रिया का समानान्तर संगुफन करता हुआ अपनी संवेदना को जीवंत बनाता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, February 2021
Impact Factor: 5.731

शमशेर के भाषिक रूपाकार और उनकी रचना-प्रक्रिया सुदीर्घ नहीं होती है, वह जटिल और संश्लिष्ट होते हुए भी प्रभाव की दृष्टि से 'बिखराव' को भी 'केन्द्रीकृत संवेदन' में रूपांतरित कर देते हैं। गजल में इसी प्रकार का केन्द्रीकरण प्राप्त होता है। जो शमशेर की अनेक कविताओं में भी दृष्टव्य है। यह सही है कि शमशेर ने कुछ लम्बी कविताएँ लिखी हैं। (जैसे-राग, अमन का राग, एक नीला दरिया बह रहा) पर उनमें भी प्रत्येक 'खंड' अपने में पूर्ण है और भाव संवेदन का एक केन्द्रीकृत सघन रूप है। यह केन्द्रीकरण 'मैं' में या नीले दरिया में अथवा 'रागतत्व' में प्राप्त होता है। जो 'खंड' (कविता) होते हुए भी अपने में पूर्ण है। 'एक नीला दरिया वह रहा, के दूसरे खंड की ये, पंक्तियाँ दृष्टव्य है जिसमें 'मैं' और 'गहराइयों को सापेक्ष सम्बन्ध मानता है--

"सब गहराइयाँ 'मैं' में समा जाती है-

'अजब बेअदबी है जमाने की-कि

कि

अक्स है इन्तिहाई गहरा

वही दरिया

और वो मुझे ले गया डुवा

जहाँ इन्तिहाई गहराइयों के सिवा

और कुछ न था

एक इन्तिहाइयत-हाइयत

जो कि महज़ महज... महज

मैं हूँ-और

कुछ नहीं यहाँ"।[६]

कवि के सृजनात्मक बोध में चित्र-शैली का भी समाहार प्राप्त होता है। और अक्सर उनकी कविताओं में उनकी रचनात्मकता पर 'चित्र' अधिक हावी हो गया है, पर ऐसी कविताएं बहुत अधिक नहीं है। कवि के 'मनस' पर रंग और रेखा का जो प्रभाव लक्षित होता है, उनमें एक 'लय' और 'ध्वनि' का समाहार प्राप्त होता है। कवि की अनुभूति में चित्र और ध्वनि का एक अद्‌भुत सम्मिश्रण प्राप्त होता है। और इसी से, उनके द्वारा प्रयुक्त शब्द-संयोजन का रूप कुछ इस प्रकार का होता है कि उनके माध्यम से एक 'बिम्ब-चित्र' का सृजन हो जाता है जो उनकी कविता

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, February 2021
Impact Factor: 5.731

का एक प्रमुख एवं महत्वपूर्ण अंग है। इस प्रकार चित्र, उनकी अनुभूति के लिए 'दर्पण' का काम करते हैं और इस तथ्य को समझ लेने पर उनकी रचना प्रक्रिया या कवि कर्म को सही परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। यहाँ पर शमशेर का चित्रकार रूप उनके काव्य रूप का सहायक या पूरक सा लगता है। 'घनीभूत पीड़ा' 'ये लहरें घेर लेती हैं' 'एक मौन' आदि कविताओं में इसी प्रकार की रचनात्मकता प्राप्त होती है।

शमशेर की कविता का सृजनात्मक बोध एक अन्य तथ्य की ओर संकेत करता है जो सामान्य न होकर विशिष्ट हो। मुक्तिबोध ने उनकी कविता को दृष्टि में रखकर एक महत्वपूर्ण बात कही है कि "उनके सृजनात्मक बोध में वास्तुविकता के उलझे प्रसंग होते हैं, और ये प्रसंग विशिष्ट भाव प्रसंग कहे जा सकते हैं।"[७]

मुक्तिबोध 'आगे चलकर एक और बात कहते हैं कि शमशेर सामान्यीकृत भावों के कवि नहीं है वे विशिष्टीकृत भावों के कवि हैं। उनके अनुसार सामान्यीकरण एक यान्त्रिक प्रक्रिया है जबकि विशेषीकरण यान्त्रिक क्रिया नहीं है। यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि विज्ञान के क्षेत्र मे यांत्रिकता सामान्यीकरण क्रिया भी है और विशेषीकृत भी। यात्रिकता जहाँ एक ओर 'सामान्य' की ओर ले जाती है, वहीं उसकी प्रक्रिया 'विशेष' की ओर ले जाती है। यहीं नहीं, शमशेर बिम्बों और प्रतीकों के प्रयोग में भी 'विशिष्ट' है, सामान्य बिम्ब भी उनकी कविता में 'विशेष' होकर आते हैं चाहे वह किसी भी प्रकार के बिम्ब और रूपाकार हों। ऊषा, सूर्य, जल, मेघ, शिला, पर्वत, सागर, और लहर आदि ऐसे सामान्य बिम्ब रूप रूपाकार हैं जो उनकी कविता में एक 'विशेष' संदर्भ लेकर आते हैं- ऐसा सन्दर्भ जो शांत, तरल, गंभीर, होता है। उदाहरण के लिए-

"न पलटना उधर
कि जिधर ऊषा के जल में
सूर्य का स्तंभ हिल रहा है
न उधर नहाना प्रिय।"[८]

शमशेर के इस 'विशेष' में एक प्रकार का नाटक है, कथानक है, कुछ पात्र हैं और साथ में एक पार्श्वभूमि है जिसकी सापेक्षता में उसकी सृजन प्रक्रिया गतिशील होती है।

शमशेर की रचना प्रक्रिया में और उनकी संवेदनात्मक संरचना में एक अन्य तत्व महत्वपूर्ण है जो उन्हें 'संक्षेपण' की ओर ले जाता है। कवि का मानस 'गोपन' को इतना महत्व देता है कि वे अपनी 'बात' को 'सेन्सर' का

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, February 2021
Impact Factor: 5.731

रूप दे देते हैं। वे अपनी बात को बोलने का रूप देते हैं, पर अत्यंत संक्षेपण के साथ। उनका यह विश्वास है कि 'बात बोलेगी, हम नहीं, और जब बात बोलेगी, तो अवश्य ही 'भेद खोलेगी'। कवि की सृजनात्मकता मे यह 'बात' और 'भेद' की एक आँख मिचौली चलती रहती है जो कभी धूमिल कभी स्पष्ट, कभी सांकेतिक और कभी इतनी संक्षिप्त होती है कि शब्दों का संयोजन कम से कम होता है। कम से कम शब्दों के द्वारा अपनी 'बात' को कहना शमशेर के सृजनात्मक बोध का एक ऐसा तत्व है जो उन्हें नयी कविता के अन्य कवियों से अलग खड़ा कर देता है इस गोपन के द्वारा उनकी कविता कहीं कहीं पर अस्पष्ट और उलझाव भरी हो गयी है, पर एक बार यह उलझाव स्पष्ट हो जाय, तो कविता का सौंदर्य क्रमशः उद्भासित होने लगता है। आज का भावबोध मूलतः उलझाव-भरा ही है क्योंकि युग की संवेदना का यह एक अभिन्न अंग हैं जो समाज, व्यक्ति और राष्ट्र के जीवन में अनेक स्तरों पर देखा जा सकता है। यह उलझाव, टूटन और विखराव को अभिव्यक्ति के धरातल पर व्यक्त करता है और इसी से, कवि का बोध इस 'टूटी हुई, 'बिखरी हुई, अनुभूति को अनेक रूपाकारों के द्वारा समेटना चाहता है। कवि की 'खाल' उसे कभी अपने से चिपकी हुई और कभी अपने से अलग प्रतीत होती है जो आज की विसंगति को आज के उलझाव को एक बिम्बात्मक रूप मे प्रस्तुत करती है-

"टूटी हुई, बिखरी हुई चाय
की दली हुई पांव के नीचे पत्तियाँ
मेरी कविता
कुछ ऐसी मेरी खाल
मुझसे अलग सी, मिट्टी में
मिली सी।"[९]

शमशेर के बारे में अक्सर यह कहा जाता है कि वे मनः स्थितियों (मूड) के कवि हैं (मलयज) यह सही है कि कवि की सृजन प्रक्रिया का एक प्रमुख प्रेरणा स्रोत 'मूड' है, पर यह मनः स्थिति के वक्त प्रभाववादी या बिम्बधर्मी नहीं है। कवि के काव्य में मनोदशाओं का जो भी रूप प्राप्त होता है वह जीवन और जगत के विभित्र रूपों और संवेदनाओं से जुड़ा हुआ है। उनकी मनोदशा नितान्त एकांतिक नहीं है, यह अवश्य है कि उसमें 'मौन' के प्रति एक आग्रह अवश्य है इस परिप्रेक्ष्य में यह भी कहना न्याय संगत नहीं लगता है कि कवि के काव्य में 'दृष्टि' या

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, February 2021
Impact Factor: 5.731

'अन्तर्दृष्टि' का अभाव है अथवा उसका सार्थक स्वरूप नहीं प्राप्त होता है।[१०] शमशेर का 'विजन' अन्तर्दृष्टि सापेक्ष है जो प्रकृति और वस्तुओं के मध्य एक गहरा एवं भेदक संबन्ध स्थापित करता है।

शमशेर की काव्यभाषा का स्वरूप उनकी कविता के समान ही 'निजी' और 'विशिष्ट' है। इस 'निजता' और विशेषता में भाव, विचार तथा संवेदनाएँ 'दृश्य' रूप में आती हैं और ये 'दृश्य' बिम्बात्मक रूपाकारों के द्वारा व्यक्त होते हैं। शमशेर की कविताओं में 'संज्ञायो' का एक रचनात्मक सन्दर्भ प्राप्त होता है जो 'एक पीली शाम' 'सींग और नाखून' तथा 'शिला खून पीती थी' आदि कविताओं में दृष्टव्य है। यह भी एक सत्य है कि जहाँ पर भी उनका चित्रकार किसी वातावरण या दृश्य की सृष्टि करने लगता है तो संज्ञापदों की बहुलता दर्शित होने लगती है। उदाहरण 'शिला खून पीती थी, कविता है जिसमें अधिकतर संज्ञापद हैं जैसे-शिला, खून, पत्थर, कल्पतरू और चबूतरा आदि जिनके द्वारा कवि ने यथार्थ की गहरी संवेदना को प्रकट किया है और ये सभी 'शब्द' संज्ञा होने के साथ ही साथ, प्रतीकात्मक अर्थों की व्यजंना करते हैं-

"और यह पक्का चबूतरा
ढाल में चिकना
सुतल था
आत्मा के कल्पतरु का।"[११]

शमशेर की काव्यभाषा में सर्वनामों का प्रयोग एक विशेष संदर्भ रखता है क्योंकि इन शब्दों द्वारा जो एकाक्षर या दो अक्षर वाले होते हैं। (मैं, तुम, वे हम) उनके द्वारा कवि 'स्व' और 'पर' के संबन्ध को रूपायित करता है। यह संबंध प्रेम, प्रवृत्ति मानवता, व्यथा, यथार्थ और कभी-कभी 'रहस्य' भाव की भी व्यंजना करता है।

यदि व्यापक सन्दर्भों में कहा गया जाय तो इन सर्वनामों के द्वारा वे अपने संबन्धों को, जो विविध आयामी हैं 'निकटता' अपनत्व और संवादिता की सार्थक और राग पूर्ण स्थितायाँ उत्पन्न करते हैं। उदाहरण है- 'टूटी हुई, बिखरी हुई' कविता। इस कविता में 'पर' के लिए 'प्रेमिका' 'वह' और 'तुम' का प्रयोग संबन्ध की सापेक्षता में किया गया है। जिसमें 'वह' दूरी और 'तुम' निकटता का बोध कराते हैं। इनके प्रेम कविता में उदारता है सिर्फ मांसलता ही मांसलता नहीं-

"हाँ तुम मुझसे प्रेम करो जैसे मछलियाँ लहरों से करती हैं

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, February 2021
Impact Factor: 5.731

जिनमें वह फंसने नहीं जाती।

जैसे हवाएं मेरे सीने में करती हैं

जिसको वह गहराई तक दबा नहीं पाती

तुम मुझसे प्रेम करो जैसे मैं तुमसे करता हूँ।"[१२]

शमशेर की काव्य-भाषा का स्वरूप जैविक और संश्लिष्ट है और भाषिक (वाक्यगत) संरचना के प्रयुक्त अन्तराल इस संश्लिष्टता को भंग नहीं करते हैं पर ऊपर से लगता है कि वाक्य भंग कर दिए गए हैं। शमशेर ऐसे कवि हैं जिन्होंने 'अंतराल' का सार्थक प्रयोग किया है-

'छिपी हुई हाय-हाय में

सुकून की तलाश।'

शमशेर की काव्यकला का एक प्रमुख तत्व है-संगीत की अमूर्तन प्रक्रिया जो उनकी भाषा को 'लय' से संयुक्त करती है।

शमशेर की काव्यभाषा के अनेक स्तर हैं। कहीं वह बोलचाल की भाषा के निकट है तो कहीं वह छायावादी बोध के निकट, तो कहीं उर्दू की बोध और तलाश के निकट है। शमशेर की काव्यभाषा सीमाओं के बंधन को तोड़ती है। और भाषिक स्तर पर वे हिन्दी और उर्दू से परे 'भाषा' को सार्थकता देते हैं। उनकी भाषा उर्दू और हिन्दी का एक सार्थक संगम है- एक ऐसा संगम जिसमें सब कुछ 'विलय' हो जाता है। उनकी भाषा प्रेम की 'साँची' भाषा है जो अपने युग में कबीर की भाषा थी –

"मैं तो न जानूँ उर्दू कि हिन्दी

प्रेम की बानी साँची रे साँची।"[१३]

शमशेर के लिए सौन्दर्य एक आभ्यांतरिक प्रक्रिया है। जिसमें बाह्य जगत का रागात्मक स्पन्दन प्राप्त होता है। कवि के बिम्ब और प्रतीक इसी आभ्यांतर प्रक्रिया के फल है। उनका रचना संसार इसी से विम्बात्मक है जिसमें 'राग' और विचार का एक अद्‌भुत और सारगर्भित समन्वय है अथवा एक ऐसा 'घोल' है जिसे संवेदना एवं एहसास के धरातल पर ही अनुभूत किया जा सकता है। अतः कवि मूलतः बिम्बवादी कवि हैं क्योंकि, उनके काव्य में जो भी 'बात बोलती है' वह विम्बों और प्रतीकों के द्वारा ही 'बोलती' है। उनका यथार्थ, वास्तव और आतंरिक जगत सभी 'बिम्बों' के द्वारा रुपायित होते हैं। यही कारण है कि कवि का रचना संसार अनेक आयामी एवं

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, February 2021
Impact Factor: 5.731

विम्बात्मक है अथवा ये आयाम बिम्बों के द्वारा ही व्यंजित होते हैं। शमशेर के काव्य का यह एक ऐसा तत्व है जो उन्हें अपने समकालीनों से अलग कर देता है। शमशेर की 'पहचान' उनके बिम्बों एवं भाषिक प्रयोगों पर ही आधारित है और इस भाषिक प्रयोग में 'अंतरालों' और सघन संक्षिप्त पंक्तियों का अनुक्रम और संयोजन अपने ही प्रकार का होता है जो उनका 'निजी' है।

सन्दर्भ-

१- 'इतने पास अपने', शमशेर, पृष्ठ-५५

२- 'कुछ और कविताएँ', शमशेर, पृष्ठ-८

३- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास', डॉ० राम स्वरूप चतुर्वेदी

४- 'शमशेर', सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (सं०), पृष्ठ-९३

५- 'शमशेर', की कविता, नरेन्द्र वशिष्ठ, पृष्ठ- २६ २७

६- 'शमशेर', सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (सं०), पृष्ठ ९२

७- 'वही, पृष्ठ- १४

८- कुछ और कविताएँ', शमशेर, पृष्ठ- ४५

९- 'वही, पृष्ठ ५४

१०- ' मुक्तिबोध' ने शमशेर को इसी दृष्टि से देखा है।

१- 'कुछ और कविताएँ', शमशेर पृष्ठ ७५

१२- 'वही, पृष्ठ- ५३

१३- 'बिम्बों में झाँकता कवि', डॉ० वीरेन्द्र सिंह, पृष्ठ- ४५